

→ शहदालंकार के शेष —

शहदालंकार के ~~मुख्य~~ मुख्यतः तीन भेद हैं:- अनुप्राप्त, प्रमाणिक, श्लेष।

अनुप्राप्त अलंकार :- जहाँ पर एक वर्ण की आवृत्ति तक से आधिक बार लो, वहाँ अनुप्राप्त अलंकार होता है; जैसे ① तरनि, तनूजा, नट तमाल तक बहु बहु धापे।

② चाहुंचंड की चंचल लिंगे खेल रही है जल वल में। इन दोनों पांकितों में कमशः त और च वर्ण की आवृत्ति एक ते आधिक बार हुर है।

प्रमाण अलंकार :- जहाँ एक शहद की आवृत्ति दीया दो से आधिक बार हो, परन्तु उनके अर्ब अलग-अलग होते हैं, वहाँ प्रमाण अलंकार होता है; जैसे:-

① कनक कनक ते सो गुनी, मादकता भविकाय।

पा छापे बौराप जग, वा पापे बौराप।।

② तीन बेर छानी ची बो तीन बेर छानी है।

पदा पर पहले कनक शहद का अर्ब धूतुरा, और दूसरे कनक का अर्ब सोना है।

श्लेष अलंकार :- श्लेष का अर्ब है 'निपक द्वाजा'। जब पांकित में एक ती शहद के अनेक अर्ब होते हैं, तब वह श्लेष अलंकार होता है; जैसे -

रहिमन पानी राखिपे, बिन पानी लब लून।

पानी गये न ऊबरै, भोती, भानुल धून।।

(यहाँ पानी शहद के तीन अर्ब — चमान, प्रतिश्वास और जल हैं)

शृणकार्य :- अलंकार की परीभाषा, एवं भेद याद लौरे।

प्रकरण - अलंकार

अलंकार

जिस प्रकार आश्वषणों के द्वारा शरीर की शोभा में वृद्धि होती है उसी प्रकार शब्दों और अर्थों द्वारा काव्य की शोभा में वृद्धि होती है। अचान्त जो सुशोभित करता है, वह अलंकार है।

अलंकार की परिभाषा :-

अलंकार की परिभाषा अनेक आचार्यों ने अपने-अपने द्वारा से प्रस्तुत किया है।

- ① आचार्य भास्मद के अनुसार, "अलंकरोति इति अलंकारः" अर्थात् जो अलंकृत करे वही अलंकार है।
- ② आचार्य दण्डी के अनुसार, "काव्यशोभाकरान् धर्मान् अलंकारान् प्रवक्ष्यते।" अर्थात् काव्य की शोभा बढ़ाने वाले धर्म अलंकार कहलाते हैं।

अलंकार के भेद :-

अलंकार मुख्यतः दो आणों विभाजित हैं। - शब्दालंकार एवं अर्थालंकार का एक तीसरा भी भेद होता है - उभयालंकार

शब्दालंकार : — जहाँ केवल शब्दों के द्वारा चमकार उत्पन्न होता है, वहाँ शब्दालंकार होता है। जैसे:-
"तेस, भद्रेस, गनेस, दिनेस, सुरेसदु जाहि तिर-तर गग्वे,"
अर्थालंकार ! — जहाँ केवल अर्थ के द्वारा चमकार उत्पन्न होता है वहाँ अर्थालंकार होता है। जैसे:-
(मील के भत्ता-सी मुख-प्रभा, सरस तुद्या-ते बोल)

प्रकार - अलंकार

अलंकार

जिस प्रकार आश्वरणों के द्वारा शरीर की शोभा में वृद्धि होती है उसी प्रकार शब्दगत और अर्थगत चमत्कार के द्वारा काव्य की शोभा में वृद्धि होती है। अर्थात् जो सुशोभित करता है, वह अलंकार है।

- अलंकार की परिभाषा:-

अलंकार की परिभाषा) अनेक आचार्यों ने अपने-अपने ढंग से प्रस्तुत किया है।

- ① आचार्य शामद के अनुसार, "अलंकरोली इति अलंकारः" अर्थात् अलंकृत करे वही अलंकार है।
- ② आचार्य धर्मी के अनुसार, "काव्यशोभाकरान् धर्मान् अलंकारान् पृच्छाते।" अलंकृत काव्य की शोभा बढ़ाने वाले धर्म अलंकार होता है।

- अलंकार के भेदः -

अलंकार मुख्यतः दो भागों विभाजित है - १- शब्दालंकार २- अव्यालंकार
अलंकार का एक तीसरा भी भेद होता है - ३ अपालंकार

शब्दालंकार : — जहाँ केवल शब्दों के द्वारा चमत्कार उत्पन्न होता है, वहाँ शब्दालंकार होता है। जैसे :-
"सेस, महेस, गनेस, दिनेस, सुरेसन्तु जाहि निरन्तर गग्म।"

अव्यालंकार ! — जहाँ केवल अर्थ के द्वारा चमत्कार उत्पन्न होता है अव्यालंकार होता है! जैसे :-
'नीलभूमल-सी मुख-प्रभा, सरस लुधा-ते बोल'

— शालोलंकार के अद्वा —

शालोलंकार के ~~तीन~~ मुध्यतः तीन भेद हैं! — अनुष्ठान, प्रमाण, श्लोक।

अनुष्ठान अलंकार! — जहाँ पर एक वर्ण की आवृत्ति लक्ष से आधिक बार हो, वहाँ अनुष्ठान अलंकार होता है, जैसे ① तरानि तनूजा तट तमाल तरुगर बद्धु दोमे।

② चाहुं चंद्र की चंचल अंकरण खेल रही है जल वल में इन दोनों पांकिरपी में अभ्यासः त और च वर्ण की आवृत्ति एवं लै आधिक बार हुई है।

प्रमाण अलंकार! — जहाँ एक शाल की आवृत्ति दी या दो से आधिक बार हो, परन्तु उनके अर्व अलग अलग होते हैं, वहाँ प्रमाण अलंकार होता है; जैसे! —

① कनक कनक ते सो गुरी, भादकता अधिकाप ।

पा छोपे बौराप जग, का पाजे बौराप ॥

② तीन बेर छाती ची गे तीन बेर छाती हैं।

पद पर पहले कनक शाल का अर्व धारुरा, और दूसरे कनक का अर्व सोना है।

श्लोक अलंकार! — श्लोक का अर्व है 'चिपका हुआ'। जब पांकिर में एक ही शाल के उनीक अर्व होते हैं, तब वहाँ श्लोक अलंकार होता है; जैसे —

रहिमन पानी राखिये, बिन पानी लख धून ।

पानी गये न ऊबरे, भोती, मानुल धून ॥

(यहाँ पानी शाल के तीन अर्व — प्रमाण, प्रतिशो और जल हैं)

गृहकार्य! — अलंकार की परिभाषा, एवं भेद याद लौटे।

अलंकार

जिस प्रकार आश्चर्यजनक के द्वारा शरीर की शोभा में बहुती है उसी प्रकार शब्दात् और अर्थात् व्याकरण के द्वारा काव्य की शोभा में बहुती है। अर्थात् जो सुशोभित करता है, वह अलंकार है।

अलंकार की परिभाषा:-

अलंकार की परिभाषा अनेक आचार्यों ने अपने-अपने द्वारा से प्रस्तुत किया है।

- ① आचार्य भासद के अनुसार, "अलंकरोति इति अलंकारः" अर्थात् जो अलंकृत करे वही अलंकार है।
- ② आचार्य धर्मी के अनुसार, "काव्यशोभाकरणं धर्मात् अलंकारान् पुच्छते।" अर्थात् काव्य की शोभा बढ़ाने वाले धर्म अलंकार कहलाते हैं।

अलंकार के भेदः:-

अलंकार मुख्यतः दो भागों विभाजित हैं। - शब्दालंकार २. अर्थालंकार
अलंकार का एक तीसरा भी भेद होता है - उभयालंकार

शब्दालंकार : — जहाँ केवल शब्दों के द्वारा व्याकरण उत्पन्न होता है, वहाँ शब्दालंकार होता है। जैसे:-

"तेस, महेस, गनेस, दिनेस, सुरेश्वर जाहौं विरहर गगर,"

अर्थालंकार ! — जहाँ केवल अर्थ के द्वारा व्याकरण उत्पन्न हो वहाँ अर्थालंकार होता है। जैसे:-

"मील के भल-सी भुज-प्रभा, सरस तुदा-ले लोल।"

=> विभाव -> जो साक्षि, बहुत, परिचित विभाव उनके हाथी भाव को जागारीन पा उद्दीपन करती है, उन्हें विभाव कहते हैं। विभाव दे प्रलाप के होते हैं। (i) आलम्बन (ii) उद्दीपन

(i) आलम्बन विभाव - हाथी भाव में लिन व्यक्तिपौर्ण, बहुत ही अलग लेकर आपने को प्रकट करते हैं, उन्हें आलम्बन विभाव कहते हैं। इसके दो भेद हैं: - (i) आश्रय (ii) विषय

(ii) आश्रय - जिस साक्षि के मन में राते अग्री हाथी भाव उत्पन्न होते हैं, उसे आश्रय कहते हैं।

(ii) विषय - जिस व्यक्ति पा वस्तु के कारण आश्रय के चिल में राते अग्री हाथी भाव उत्पन्न होते हैं, उसे विषय कहते हैं।

(ii) उद्दीपन विभाव - भाव को उद्दीपन अवग नीत करने वाली वस्तु या घटाएँ अग्री को उद्दीपन विभाव कहते हैं।

=> अनुभाव -> अनुभाव शब्द का अर्थ है, 'अनुभव करना', प्रत्योगत भावों को व्यक्त करने वाले भाव को अनुभाव कहते हैं।

(i) कापिक अनुभाव (ii) मानातिक अनुभाव

(iii) सातिक अनुभाव (iv) आहार्ष अनुभाव

=> संचारी भाव -> आश्रय के चिल में उत्पन्न होने वाले आठविं - मनोविज्ञानों को संचारी भाव कहते हैं। इनकी संख्या 33 मानी गई है।

=> शृंगार रस की 'रसराज' पा रसों का राजा फूड जाता है।

गृह भार्ज -> रस की परिभाषा, हाथी भाव एवं इसके अंगों को परिभाषित ढंग से धार्य करे।

2020.05.12 07:17